UGC Approved Journal No - 4095
ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

An Interdisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

जिज्ञासा

Chief Editor :
Indukant Dixit

Executive Editor :
Shashi Bhushan Poddar

Editor :
Reeta Yadav

स्वरोंजगार से जुडने के पश्चात् महिलाओं की धार्मिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति का एक समाजशास्त्री अध्ययन : बागेश्वर जनपद के विशेष सन्दर्भ में

*डॉ. सरिता**

Abstract- किसी भी देश के विकास में पुरूषों के साथ–साथ महिलाओं का योगदान भी महत्वपूर्ण होता हैं। महिलाएँ समाज का अभिन्न अंग होती हैं, महिला–पुरूष समाज रुपी रथ के दो पहिये है। यह मात्र कल्पना न होकर वैज्ञानिक सत्य हैं, क्योंकि सृष्टि की सम्पूर्णता इन दोनों पर निर्भर होती हैं। किसी भी राष्ट्र के सुदृढ एवं सशक्त होने के लिए यह आवश्यक है, कि उसकी पूरी आबादी को समान अवसर प्राप्त हों। महिलाएँ पूरी आबादी का आधा हिस्सा होती है और उनकी अनदेखी करके वास्तविक विकास को मूर्त रुप नहीं दिया जा सकता। इसके लिए आवश्यक हैं, कि महिलाओं को विकास मुख्यधारा से जोड़कर सशक्त बनाया जाय।

Keywords — महिलाएं, धार्मिक आस्था, स्वास्थ्य, स्वरोंजगार, परिवर्तन सशक्तिकरण।

प्रस्तावना–: भारतीय सामाजिक व्यवस्था में पुरूष सत्तात्मकता धर्म एवं जाति के मध्य के गढजोड़ ऐसे महत्वपूर्ण स्वरूपों को निर्मित करते हैं, जिनकी अभिव्यक्ति उन मूर्ति प्रहारवाओं के रूप में होती है, जो भारतीय समाज के लोकतांत्रिक परिवेश को चुनौती देती है।[1] धर्म एवं पारम्पारिक न्याय प्रणाली की विवेचना का महिलाओं के सम्बन्ध में निर्धारण पुरूष मानसिकता से उभार लेता है और असमानता को बढ़ावा देता है। भारतीय समाज में धार्मिक विश्वास, पितृसत्तात्मक विचारधारा के रूप में महिलाओं की अधीनस्थता को वैधता प्रदान करने में सहायक होते है, जो पवित्रता को वयक्त करती है।

धर्म की मुख्य विशेषताओं कर्म एवं पुनर्जन्म के सिद्धान्त की वैधता आज भी किसी न किसी रूप में देखी जा सकती है। भारतीय समाज में आज भी अच्छे कर्मों को पुत्र जन्म तथा अस्वीकार्य कर्म को पुत्री जन्म से सम्बन्धित मानने का विश्वास परिलक्षित होता है, जो समाज में पुत्रियों के महत्व को कम करता है। इससे स्पष्ट होता है कि पुरूष मानसिकता आज भी धार्मिक आधार पर महिलाओं को धर्म, जाति व पारिवारिक उत्तरदायित्वों को केन्द्र में रखकर महिलाओं के निर्णय व आगे बढ़ने में अवरोध उत्पन्न करता है। भारत में धर्म इतिहास और समकालीन जीवन के

* असिस्टेंट प्रोफेसर , समाजशास्त्र विभाग एवं सामाजिक कार्य विभाग, आईएफटीएम यूनिवर्सिटी मुरादाबाद उत्तर प्रदेश।

पहलुओं में से एक है। यह कहना गलत नहीं होगा कि धर्म भारत में आज भी अनेक लोगों के हितों को सगाहित करने वली इकाई है और आगे भी यह कार्य इसी तरह करता रहेगा।

"पूर्व के दशकों में जीवन का कोई भी आयाग आधुनिक भारत में भी धर्म के अस्तित्व को धर्म की वैकल्पिक कार्य पद्धति के स्वरूप में महसूस किया जा सकता है।[2] धर्म मानव जीवन एवं समाज की अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सार्वभौमिक धारणा है। प्रत्येक समाज में चाहे वह आदिम हो या सभ्य, सरल हो अथवा जटिल, ग्रामीण हो अथवा नगरीय धर्म की अभिव्यक्ति अवश्य पायी जाती है। विभिन्न क्षेत्र व संस्कृतियों में धर्म का स्वरूप अलग अलग होता है। लेकिन प्रत्येक समाज में यह किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान होता है। "मानव समाज में धर्म इतना सार्वभौमिक स्थायी तथा व्यापक है कि इसे सर्वव्यापक रूप से समझे बिना समाज को नहीं समझा जा सकता हैं।[3]

भारतीय समाज सदैव धर्मपरायण एवं नैतिक कर्तव्यों पर केन्द्रित रहा है, जो मानव कल्याण का पोषण और विज्ञान, जिज्ञासाओं व आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु महत्वपूर्ण होता है। यह एक ऐसा सर्वव्यापक एवं स्थायी तथ्य है, जिसे समझे बिना समाज को नहीं समझा जा सकता। इसका सम्बन्ध मानव की अलौकिक शक्तियों, भावनाओं, श्रद्धा एवं भक्ति से होता है। यह मानव के आन्तरिक जीवन के साथ सामाजिक,आर्थिक व सांस्कृतिक जीवन को भी प्रभावित करता है। इसलिए **टाइलर** ने "धर्म को एक अलौकिक शक्ति पर विश्वास" कहा है।[4]

भारतीय समाज अपनी धर्मपरायणता के कारण हमेशा से आदरणीय रहा है। यह भारतीय समाज का सर्वोच्च आदर्श तथा मनुष्य के अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने का सर्वोत्तम साधन माना गया है। "भारतीय इति हास में धर्म समकालीन जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। यह कहना गलत नहीं होगा कि धर्म आज भी भारत में अनेक लोगों के हितों को समाहित करने वाली इकाई है और जीवन का कोई भी आयाम धर्म के समान महत्व प्राप्त नहीं कर सका। भारतीय सामाजिक संबन्ध आवश्यक रूप से धार्मिक विचारों एवं क्रियाओं से भरे हुए है।"[5]

पाश्चात्य विचारकों के साथ ही जाति प्रथा, भारतीय विद्वानों ने भी भारतीय धर्म साधना को रूढ़िग्रस्त तथा हठधर्मितापूर्ण कहकर उसे दुराग्रह मूलक सिद्ध करने का प्रयत्न किया। उसे वर्तमान समाज के बदलते परिवेश के अनुसार अनुपयुक्त, वैज्ञानिकता के युग में अनुपयोगी कहा "वास्तव में भारत में हिन्दू धर्म क्रमिक रूप से एक ऐसा युक्तियुक्त संश्लेषण रहा है, जिसमें वैज्ञानिक उन्नति के साथ अपने अर्न्तजीवन में नित्य नूतन विचारों का सन्निविश करने में कदापि संकोच नहीं किया। यही कारण है कि हमारे देश के धार्मिक आन्दोलन मानवीय कल्पनाओं अथवा निराधार आस्थाओं का प्रतिफल न होकर ठोस तर्क भूमि पर अधिष्ठित है"[6]। परम्परागत ग्रामीण

समाज धर्म प्रधान समाज रहा है। जहाँ धर्म की महत्ता सर्वोपरि व सर्वक्षेत्र व्याप्त है। यह व्यक्ति, परिवार और समाज के जीवन को अगणित रूपों से प्रभावित करता है। भारतीय समाज में भौतिक सुख प्राप्ति जीवन का लक्ष्य न होकर धर्म संचय की प्रधानता पर विश्वास किया जाता है या ये कहा जाय कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था पूर्ण रूप से धर्म पर केन्द्रित है, तो अतिशयोक्ति न होगी। "धर्म की धारणा के अन्तर्गत मानव उन सब अनुष्ठानों और गतिविधियों को करता है जो मानवीय जीवन को गढ़ती व बनाये रखती है। हमारे पृथक पृथक हित होते है, विभिन्न इच्छाएँ होती है और विरोधी आवश्यकताएँ होती हैं जो बढ़ती हैं और बढ़ने की दशा में परिवर्तित भी हो जाती है। धर्म का सिद्धान्त हमें आध्यात्मिक वास्तविकताओं को मान्यता देने के लिए सजग करता है"[7]।

प्रत्येक धर्म का आधार किसी शक्ति पर विश्वास है जो निश्चित रूप से मानव से श्रेष्ठ है, परन्तु केवल विश्वास को सम्पूर्ण धर्म नहीं कहा जा सकता है। विश्वास का एक भावात्मक आधार भी होता है, जैसे शक्ति के सम्बन्ध में भय या उसके दण्ड का भय, साथ ही उस शक्ति के प्रति श्रद्धा, शक्ति या प्रेमभाव भी धर्म के आवश्यक अंग है। महिलाएँ हमेशा से समाज का एक महत्वपूर्ण अंग रही है और अधीनस्थता की संस्कृति को स्वीकार करते हुए उन्होंने पुरूष समाज द्वारा निर्मित कर्तव्यों का चाहे वे सामाजिक हों, आर्थिक या धार्मिक, निष्ठापूर्वक निर्वहन करने का प्रयास किया है और करती हैं। यही कारण है कि उन्हें धर्मभीरू माना जाता है। वर्तमान में महिलाएँ शिक्षित होने के साथ घर से बाहर निकलकर विभिन्न क्षेत्रों में अपना लोहा मनवा रही है। लेकिन धार्मिक रूढ़िवादिता से उभर कर निकल पाना उनके लिए किसी चुनौती से कम नहीं दिखायी पड़ता। बात यदि उत्तराखण्ड की, की जाय तो यहाँ धार्मिक विश्वास प्रचुरता में पाये जाते हैं और उतनी ही प्रचुरता में उनके अनुयायी विशेष रूप से महिलाएँ, घरेलू हों या कामकाजी धर्म के प्रति इनमें अटूट आस्था परिलक्षित होती है। सदियो से धर्म के नाम पर बनाये गये नियमों का पालन करना इनकी नियति है। महिला सशक्तिकरण के विविध आयामों में धार्मिक आधार पर महिलाओं को सशक्त करना एक महत्वपूर्ण **चर** के रूप में स्वीकार किया जाता है। अतः प्रस्तुत अध्याय के माध्यम से चयनित उत्तरदाताओं से ईश्वर के प्रति आस्था, कर्म, पुनर्जन्म पर विश्वास, पवित्रता/अपवित्रता की स्थिति, जादू टोना, झाड़ फूँक, दिन बार, ग्रह, नक्षत्र, शुभ अशुभ दशाओं सम्बन्धी विचारों आदि अन्य धर्म से समबन्धित प्रश्नों के विषय में जानकारी प्राप्त कर उनकी धार्मिक स्थिति का मूल्याँकन करने का प्रयास किया गया है।

ऐसा माना जाता है कि महिलाओं के जीवन परिस्थिति एवं उनकी भूमिकाओं पर त्यौहारों, धर्म, संस्कृति, रीति–रिवाजों एवं परम्पराओं का गहरा प्रभाव पड़ता है। परम्परागत भारतीय समाज में विभिन्न त्यौहारों, धार्मिक अवसरों एवं सांस्कृतिक समारोहों तथा व्रत पूजन आदि का समस्त उत्तरदायित्व का निर्वहन महिलाओं द्वारा ही किया जाता है। इसी तरह वैदिक काल में महिलाओं द्वारा ही किया जाता है, वैदिक काल में भारतीय महिलाओं को धर्म का

केन्द्र बिन्दु और धर्मशास्त्र का आधार माना जाता है। अतः प्रस्तुत अध्याय में महिलाओं का अध्ययन धार्मिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है।

शोध प्रारूप– निदर्श पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में 110 कार्यरत स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से स्वरोजगार अपनाने वाली 355 महिला का चयन उत्तरादाताओं के रूप में किया गया है। इसमें अन्वेषणात्मक एवं विवरणात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया हैं।

यह अध्ययन जनपद बागेश्वर के तीन ब्लाकों – बागेश्वर, गरूड़ तथा कपकोट पर आधारित हैं। जहाँ स्वयं सहायता समूहों के सहयोग से स्वरोजगार अपनाने वाली महिलाओं की संख्या ब्लॉक से 50 प्रतिशत महिलाओं का चयन निदर्शन की लॉटरी पद्धति के माध्यम से करते हुए 355 अर्थात् तीनों ब्लॉको की 50 प्रतिशत महिलाओं को अध्ययन हेतु चुना गया है जो सम्पूर्ण अध्ययन का समग्र हैं।

अवधारणाओं का स्पष्टीकरण शीर्षक के प्रत्येक शब्द की व्याख्या के साथ प्रस्तुत् किया गया है। प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन व वैयक्तिक साक्षात्कार का प्रयोग किया गया है वही द्वितीयक आँकड़ों को पुस्तकालय, शासकीय प्रतिवेदन, संबंधित शोध, पुस्तके एवं साहित्य, इन्टरनेट, समाचार पत्र–पत्रिकाओं के अध्ययन के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य–:

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्वरोंजगार से जुडने के पश्चात् महिलाओं की धार्मिक स्थिति का एक समाजशास्त्री अध्ययन का अध्ययन करना है

उपलब्धियां–: जैसा कि हम सभी जानते हैं कि परम्परागत भारतीय समाज में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं को धार्मिक नियमों कर्म–काण्डों को मानने के लिए बाध्य किया जाता है अर्थात हमारे परम्परागत समाज महिलाओं से यह अपेक्षा रखता है कि वह धार्मिक नियमों का पालन कठोरता से करें। साथ ही इन परम्पराओं का निर्वाहन उसकी जिम्मेदारी भी मानी जाती है। यही कारण है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य परिवार की महिलाओं कोधार्मिक नियमों के पालन हेतु अधिक जोर देते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में भी हमारे उत्तरदाता इस बात की पुष्टि करते हैं जैसा कि निम्न सारणी से स्पष्ट होता है।

सारणी संख्या –01

परिवारिक सदस्यों द्वारा धार्मिक नियमों के पालन पर जोर दिये जाने के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं के प्रत्युत्त

क्रम0 सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	195	54.93
2.	नहीं	85	23.94
3.	कभी–कभी	75	21.13
4.	योग	355	100.00

उपरोक्त सारणी के आधार पर कहा जा सकता है कि 54.93 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात को पूर्णरूप से स्वीकार करते हैं कि परिवारिक सदस्यों द्वारा धार्मिक नियमों के पालन पर अत्यधिक जोर दिया जाता है। जबकि 21.13 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि विशेष परिस्थितियों में ही कभी कभी परिवारिक सदस्यों द्वारा धार्मिक नियमों के अनुपालन में जोर दिया जाता है। इसके विपरीत 23.94 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जिन्होंने इस मत को पूर्णतः अस्वीकार किया है कि उन पर पारिवारिक सदस्यों द्वारा उपरोक्त धार्मिक नियमों के पालन में किसी प्रकार का जोर दिया जाता है। अतः प्राप्त आँकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन के बावजूद भी धार्मिक नियमों का पालन एक महिला की ही जिम्मेदारी मानी जाती है, जिसके लिए पारिवारिक सदस्य उसे मजबूर भी करते हैं। स्वंय एक महिला भी इन रूढ़िवादी व अप्रासांगिक धार्मिक रिवाजों और रूढ़ियों से स्वंय को पूर्ण रूप से मुक्त या स्वतंत्र भी नहीं कर पाई हैं। जैसा कि निम्न सारणी से स्पष्टहोता हैं।

सारणी संख्या –02

स्वंय के रूढ़िवादी व अप्रासंगिक रिवाजों व रूढ़ियों से स्वतंत्रता केसम्बन्ध में उत्तरदाताओं के मत।

क्रम0 सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	131	36.90
2.	नहीं	188	52.96
3.	कह नहीं सकते	36	10.14
4.	योग	355	100.00

सारणी के अनुसार 36.90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि वह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रूढ़िवादी व अप्रासंगिक धार्मिक रिवाजों के कथनों से पूरी तरह स्वतंत्र हो पाई है, जबकि 52.96 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि वह आज भी उपरोक्त धार्मिक रिवाजों व रूढ़ियों से स्वंय को स्वतंत्र नहीं कर पाई है। इसके विपरीत 10.14 प्रतिशत ऐसी है, जिन्होंने इस सम्बन्ध में अपना कोई भी स्पष्ट मत व्यक्त नहीं किया है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महिला सशक्तीकरण के वर्तमान परिवेश में जहाँ एक ओर घर की चार दिवारी से बाहर निकल कर स्वंय का रोजगार स्थापित कर के आत्मनिर्भर एवं सशक्त हो रही है। वहीं दूसरी ओर धार्मिक परम्पराओं एवं रिवाजों के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित भी हैं। यही कारण है कि सर्वाधिक उत्तरदाता स्वंय को रूढ़िवादी धार्मिक विचारों से स्वंय को स्वतंत्र नहीं कर पाई है।

हालांकि उत्तरदाताओं द्वारा धर्म की स्वीकारिता को स्वीकार किया गया है। किन्तु उत्तरदाताओं द्वारा इस बात को भी पुष्टि की गई है कि रोजगार में आने के पश्चात उनके जीवन में रीति–रिवाजों की पारम्परिक

कट्टरता की गति थोड़ी धीमी हुई है। जिससे उनके धार्मिक जीवन में भी परिवर्तन दृष्टिगत होता है। निम्नांकित सारणी में उत्तरदाताओं को स्पष्ट किया गया है।

सारणी संख्या –03

रोजगार के माध्यम से धार्मिक जीवन में परिवर्तन के संबंध मेंउत्तरदाताओं के मत

क्रम0 सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	197	55.49
2.	नहीं	72	20.28
3.	थोडा–बहुत	86	24.23
4.	योग	355	100.00

सारणी के आधार पर स्पष्ट होता है कि 55.40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि रोजगार के माध्यम से उनके धार्मिक जीवन में परिवर्तन आया है। 20.28 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जो इस तथ्य को अस्वीकार करते है कि रोजगार से उनके धार्मिक जीवन में किसी प्रकार का परिवर्तन आया है जबकि 24.23 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना हैं कि उनके धार्मिक जीवन में रोजगार से थोडा बहुत परिवर्तन आया है। प्राप्त आँकडों के अनुसार स्पष्ट होता है कि स्वरोजगार ने महिलाओं के धार्मिक जीवन मे धर्म से सम्बन्धित परम्पराओं रीति–रिवाजों तथा कर्म–काण्डों में सकारात्मक परिवर्तन ला दिया है।

हिन्दू धर्म तथा हिन्दू जीवनशैली में भाग्य तथा कर्म दोनों को मुख्य स्थान दिया गया है। हिन्दू धर्म के अनुसार यदि हम कर्म करें तो उस वस्तु को प्राप्त करने में हमारे भाग्य संदैव हमारा साथ देता है। अतः व्यक्ति के जीवन में भाग्य तथा कर्म दोनों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। हमारे उत्तरदाता भी इस बात की पुष्टि करते है, कि किसी के जीवन में भाग्य और कर्म दोनों का समान महत्व है और जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए दोनों का समान महत्वहै। निम्नांकित सारणी उत्तरदाताओं के इसी मत को स्पष्ट करती है।

सारणी संख्या–04

धार्मिक तौर पर जीवन में महत्वपूर्ण स्थिति को मानने के संबंध में उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तर

क्रम0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	भाग्य को	150	42.25
2.	कर्म को	19	5.35
3.	दोनों को	186	52.40
4.	योग	355	100.00

उपरोक्त सारणी के आधार पर स्पष्ट होता है कि हमारे अधिकांश उत्तरदाता कर्म और भाग्य दोनो को अपने जीवन में महत्वपूर्ण स्थान देती

है। क्योंकि 52.40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने भाग्य तथा कर्म दोनों को अपने धार्मिक जीवन में समान रूप से महत्वपूर्ण माना है। किन्तु उन उत्तरदाताओं का प्रतिशत भी अच्छा-खासा है जो केवल भाग्य को अपने जीवन में महत्वपूर्ण मानती है। इस संबंध में 42.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने केवल भाग्य को अपने जीवन मे महत्वपूर्व स्थान दिया है केवल 5.35 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जो कर्म को अपने जीवन का महत्वपूर्ण अंग मानती है। निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि यद्यपि अधिकांश उत्तरदाता भाग्य तथा कर्म दोनों को अपने जीवन के लिए महत्वपूर्ण मानती है तथापि वहीं दूसरी ओर केवल भाग्य को महत्वपूर्ण मानने वाली उत्तरदाताओं का प्रतिशत भी अच्छा खासा है। भाग्य को महत्वपूर्ण मानने वाली उत्तरदाताओं का मानना है कि यदि कोई चीज हमारे भाग्य मे नहीं तो हम चाहें कितना भी कर्म कर लें हमें वांछित सफलता प्राप्त नहीं हो पाएंगी। यही कारण है कि अधिकांश उत्तरदाता धर्म को अपनाने के पीछे यह मानती है कि यह हमारा अनिवार्य कर्म है जिसे मानना उनके जीवन के लिए आवश्यक हो जाता हैं।

ऐसा माना जाता है कि धर्म या धार्मिक नियम केवल महिलाओं के लिए है और केवल महिलाओं पर ही लागू होते है। हमारी सामाजिक व्यवस्थाएँ भी यही मानती है, कि धर्म, धार्मिक रीति रिवाज केवल महिलाओं के लिए आवश्यक है तथा धार्मिक क्रिया कलापों को पूर्ण करने की सम्पूर्ण जिम्मेदारी केवल एक महिला कि होती है। प्रस्तुत अध्ययन में भी इस बात की पुष्टि होती है। जैसा कि निम्न सारणी से स्पष्ट होता है।

सारणी संख्या – 05

धार्मिक क्रिया कलापों में महिलाओं की पूर्ण जिम्मेदारी है के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत

क्रम0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	319	89.86
2.	नहीं	36	10.14
3.	कह नहीं सकतें	–	–
4.	योग	355	100.00

सारणी के अनुसार 89.89 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि धार्मिक क्रिया कलापों को पूर्ण करने कि जिम्मेदारी केवल एक महिला का होती है। जबकि 10.14 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस मत को अस्वीकार किया है। अनिश्चिता व्यक्त करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत शून्य पाया गया। इससे स्पष्ट होता है, कि आज भी महिलाओं के ऊपर पराम्परागत धार्मिक क्रिया कलापों को पूर्ण करने की जिम्मेदारी होती है, जबकि पुरूषों पर इस प्रकार कर कोई बंदिश नहीं होती है। प्रस्तुत अध्ययन में हमारी अधिकाश उत्तरदाता धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान प्रतीत होती है। प्राप्त आँकडो से स्पष्ट होता है कि व्यवसायगत होने के पश्चात भी उनके धार्मिक जीवन में किसी प्रकार का भी परिवर्तन या प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है।

उत्तरदाता आज भी अपने कार्यस्थल की भूमिकाओं के साथ साथ धार्मिक जीवन की भूमिकाओं का निर्वहन भी पूर्ण जिम्मेदारी के साथ करती है।

अतः इन परिस्थियों अच्छा–खासा प्रतिशत इस तथ्य को भी स्वीकार करता है कि धर्म, धार्मिक परम्पराएँ तथा रीति–रिवाजों, रोजगार प्राप्त करने की दिशा में सदैव बाधा या रूकावट उत्पन्न करता है।

प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण परिवेश से जुडी परम्परागत महिलाओं पर आधरित है जो पूर्ण रूप से अपने धर्म से जुडी हुई है इन परम्परागत समाजों में आज भी आप्रकृतिक शक्तियो पर विश्वास करने की परम्परा रहीं है जिन की जडें आधुनिकरण के वर्तमान परिपेक्ष्य में भी गहरे तक जुडी है। इन पराम्परागत समाजों में आज भी जादू–टोने जैसे अप्राकृतिक शक्तियों पर पूर्ण विश्वास करती है। हमारे उत्तरदाता भी इसका अपवाद नहीं है। जैसा कि निम्न सारणी से स्पष्ट होता है।

सारणी संख्या–06

जादू–टोने तथा अप्राकृतिक शक्तियों पर विश्वास के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तर

क्रम0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	152	42.82
2	नहीं	70	19.72
3	कभी–कभी	133	37.46
4	योग	355	100.00

उपरोक्त सारणी के आधार पर कहा जा सकता है, कि 42.82 प्रतिशत उत्तरदाता जादू–टोने तथा अप्राकृतिक शक्तियों पर विश्वास करती है जबकि 19.72 प्रतिशत उत्तरदाता इस प्रकार की शक्तियों पर विश्वास नहीं करती है। 37.46 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना हैं कि वह कभी कभी परिस्थितियों के अनुसार इस प्रकार की अप्राकृतिक शक्तियों पर विश्वास करती है। अतः सार रूप में कहा जा सकता है, कि अधिकांश उत्तरदाता आज भी जादू–टोने तथा अप्राकृतिक शक्तियों पर पूर्ण विश्वास करती है।

निष्कर्ष–:

सम्पूर्ण अध्याय के संक्षप्तिकरण करते हुए में यह कहा जा सकता है कि स्वरोजगार के माध्यम से उत्तदाताओं में जहाँ एक ओर आर्थिक स्वतंत्र एवं नवीन वैचारिकी का विकास हो रहा है, वही दूसरी ओर धार्मिक एवं स्वास्थ्य संबंधी स्थिति में भी उनकी जागरूकता के स्तर में धीरे–धीरे वृद्धि हो रही है। प्राप्त आंकडों के अनुसार सर्वाधिक उत्तरदाताओं जहां एक ओर आज भी धार्मिक परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों पर पूर्ण विश्वास रखती हैं, साथ ही अपने धर्म तथा धार्मिक उत्सवों के प्रति अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का निर्वाहन पूर्ण निष्ठा के साथ करती है। धार्मिक नियमों रीति–रिवाजों एवं परम्पराओं को आत्मसात करने के साथ